

२३८

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३५ वे ६४ (२७०)
ग्रंथ नाम अमृतानुभव.

विषय — म० वेदांत.



मेरा

(१)

इ

जि

ठणी ॥ गिवसीत आहाती एक पणि ॥ जाली सेदान्वी वाहाणी ॥ आधाधी
जिये ॥ ३५ ॥ विषेय एकांनिंजिये ॥ एकमेकान्वी विषये ॥ जिसेही वीर्जिये ॥
जियेहोघे ॥ ३६ ॥ स्त्रीपुरुष नामभेदे ॥ झेत्रिव पण एकलेनांदे ॥ जगसगले
अधाधे ॥ पण जिंही ॥ ३७ ॥ होहाडी एकिशति ॥ दाहीफुली एकद्विति ॥
दोहीदीवीदीसी ॥ एकिनिजेवी ॥ ३८ ॥ रहीबोटी एकिगोठी ॥ दोहाडोचा
एकदिठी ॥ तिवीहोघी इस्तेस्टी ॥ एकनिजेवी ॥ ३९ ॥ दावोनिदोनीपण
एकरसाने आरेगण ॥ करीत आहम दुष्पा ॥ अनादीजे ॥ ४० ॥ जो स्तामी
वियोसना ॥ त्रिंश आसोने पतिव्रता ॥ जियवीणसर्वकर्ती ॥ काहां
चनाजे ॥ ४१ ॥ जेकी भातारान्वेदिसणे ॥ भातारुजीयेन आसणे

वि

सुखि

न निजतीदोघेऽस्य ॥ निवडजिये ॥ २३ ॥ गोउआणिगुकु ॥ कापूरआणि
परिमळु ॥ निवडिताहैयपाँगुळु ॥ निवडुमैमा ॥ २४ ॥ समयदीसीघ
ता ॥ जवीदीप्रचियहाता ॥ तीजीजीयेनीयततेता ॥ शिवविचारे ॥ २५ ॥
जे सीसूर्येनिरवेप्रभा ॥ प्रभेसर्वतत्रिगाभा ॥ तेसीमेदुगिलीतशोभा
॥ एकविजीय ॥ २६ ॥ काबिंबप्रतिबिंबाधोतक ॥ प्रतिबिंबबिंबाभनुमा
पक ॥ तेसेद्वैतमिसएक ॥ बरवतभासे ॥ २७ ॥ औसर्वशून्यान्वानिष्क
षु ॥ लियाबाईलाकेलापुरष ॥ जेणदादुलेनिसन्नाविशेषु ॥ शीक्तीजा
ली ॥ २८ ॥ जीयेप्रणेश्वरीष ॥ शिवहीशिवपण ॥ थारोनेयस्तेषां
पण ॥ शिवघडिली ॥ २९ ॥ रुश्वर्यसीईश्वरा ॥ जियेनेअंगसंसारा ॥ आ

(2A)

पणहोउनित्यारा ॥ आपणनिजे ॥ २९ ॥ औपतीनेनिष्टरूपपणे ॥ ला
 जानिअंगनेमिरवणे ॥ केलेडगायेकहेलेण ॥ नामरूपाने ॥ ३० ॥ ऐका
 निवाहुकाका ॥ तेथेबङ्गपणाचासोहला ॥ जियेसदैवेनियालीका ॥ दाख
 विला ॥ ३१ ॥ अंगनियाभाठणिया ॥ करुउवयाभाणिलाडीया ॥
 स्वसंकोचेप्रिया ॥ रुठविलीजिणे ॥ ३२ ॥ जियेतेपाहावयानियालोभा ॥
 चटेदृष्टलानियाक्षोभा ॥ जियेतेनदेवतउभा ॥ अंगनिसाडी ॥ ३३ ॥ कां
 तेनियाभिज ॥ आवैलाहोडगायकढा ॥ अंगविलाउवडा ॥ जियेवेण
 ॥ ३४ ॥ हाठावेहमंदरूपे ॥ जोउवेढ्हेलेपणेनिहारपे ॥ तोजालउजीये
 नेनिपउपे ॥ विश्वरूपु ॥ ३५ ॥ जियानेववीलाद्विवु ॥ वेद्यानेबेणेबङ्ग

ओ

वार्दीतेणसीजेउ॥ नियाधाताजो॥ ३६॥ निदेलेनिभातारे॥ जेवीयेचराच
 रे॥ जियेचाविसवलानुरे॥ अमूकेपणही॥ ३७॥ जवकांनुलपेक्षेस॥ तोस्तो
 जीविविश्वासादिस॥ जियेदेयेअरिस॥ जियादेघा॥ ३८॥ जियेचेनिअंग
 लंग॥ नानंदआपणातेष्ठारागुलाग् मर्वभौन्हुष्टुरीनेघ॥ जियेवीणकाही
 ॥ ३९॥ जीयाप्रियन्वेजेअंग॥ जोप्रियूजियेचेवांग॥ कालउनिदृक्षीभाग
 जेवितेआहाती॥ ४०॥ जेसेकासमीरसगटगति॥ कोसोनयासगट
 काति॥ तेसीविविश्वाक्षि॥ अधवीचिजे॥ ४१॥ कांकलुरीसगटप
 रिमकु॥ उमेसगटभनकु॥ तेसावात्कोसीकेवकु॥ शिवुचिजो॥ ४२॥
 नातरीरातीभार्णादिको॥ पातलीसूर्यन्वाठावो॥ तेसीभापुलासाची

वाका ॥ दोषेतिये ॥ ४३ ॥ किं बद्धनातीये ॥ प्रणवाक्षरीविलक्ष्यते
ये ॥ देशोन्नीहैरिये ॥ विवरस्त्वा ॥ ४४ ॥ हे आसोनामरूपेभेदवि
रा ॥ गिरीतएकार्थ्यात्जीरा ॥ नमोत्पादिववोहरा ॥ ज्ञानदेवे
ल्लणे ॥ ४५ ॥ जयादेवात्मिका आलिंगनि ॥ विरेनिगेलीदोन्हा ॥ आ
घवेयान्वीरजनी ॥ दिठीजीसो ॥ ४६ ॥ जया अल्पनिधरी ॥ गेली
परस्सीवर्खरी ॥ निंधसीप्रब्यनीरी ॥ गगडेसी ॥ ४७ ॥ नाते
शीवायून्वच्छब्देसी ॥ जिरलाव्यामात्वियोकुसि ॥ आटलाप्रब्य
प्रकाशी ॥ सप्रभभानु ॥ ४८ ॥ तेवीन्वाहातिताययते ॥ गेलेपा
हाणेनसीपाहते ॥ युंठतीघरवरोते ॥ वंदिलीतिये ॥ ४९ ॥ जया

थथि

(३०)

चा

कला

अ०

३

(५)

चावाहानी॥ वेदकुवेद्याचेपाणी॥ नपीयेपशीसांडणी॥ अंगन्वीहीक
 री॥ २०॥ तेथेमीनमस्कारा॥ लागीउरोडुसरा॥ तेंलिंगभेदपङ्घा
 जोडजावा॥ २१॥ परीसोनेनसीदुजे॥ नहालुलेणसोनथाभजे॥ हे
 नमनेकरणेसास्त्रे॥ तेसेआहे॥ २२॥ सांगतावाचेतेवाचा॥ ठाउवा
 च्यवाच्यकाच्य॥ घडताकायभेदाच्य॥ विटाढुहेय॥ २३॥ सिंधूंगगे
 चियनीबणी॥ लीपुरषनानाचीमिरवणि॥ दिसतसेतरोकायपा
 णी॥ देतहोयील॥ २४॥ पाहेपाभास्यभासकला॥ आपुलेठायी
 चेदाविता॥ एकपणकायसविता॥ मोडतुभासे॥ २५॥ चांदानि
 यादोदावरि॥ होतचांदाणियाचीविरुरी॥ कार्यीउमीवदीमीवरी॥

Joint Project of the Archaeological Survey of India and the State Election Commission, Chandrapur, Dhule and the State Election Commission, Chavand

३४

गिवसोपादीपु ॥ ५६ ॥ मोतियाच्चीकीछ ॥ होयनोतियावरीपांगुछ ॥
 आगवेतेनिर्ति ॥ रूपायेकी ॥ ५७ ॥ आणिसात्रावियात्रिपुटिया
 ॥ प्रणवुकायकेलाविरठिया ॥ कीएकारतीरस्थाठिया ॥ भेदावलो ॥ काइ
 ५८ ॥ आहोएक्यत्वेमुद्लतदुष्ट ॥ आणिसाजिरेपणाचालाभुमिछे
 ॥ तरीस्वतरंगाचीमुकुछे ॥ तुरंबुनीकापाणी ॥ ५९ ॥ लणोनिभूते
 राआणिभवानी ॥ वंदिलीनकसाजिसिनानी ॥ मीरिघालोनमनी ॥
 तेहेएसे ॥ ६० ॥ दपेणाचेनिलागे ॥ प्रतिक्षिंचिंचिंचिरिधे ॥ काबुडीदिजे
 तरंग ॥ वायचाडेला ॥ ६१ ॥ नातशीनिहजातखेवे ॥ पावेआधणजा
 पुलाठवे ॥ तेबुध्दत्वागेदेवीदेवे ॥ वंदिलीमिया ॥ ६२ ॥ सांडनि
 स

काइ



मीठपणाचालोभु ॥ तीठसिंधुताचाघेतलालाभु ॥ तेवीशाहंदे
 उनिमीश्वरेभु ॥ शांतवीजालो ६३ विवरकीसमावेश ॥ नमनके
 लेमियाएसे ॥ रभागर्भाकारो ॥ विवालाजेसा ६४ ॥ ॥
 इनिश्वरभनुभवामृते ॥ शास्त्रानदविरचिते ॥ ॥ प्रकृति
 पुरषनमनेनास ॥ प्रकरणप्रसास ॥ ३ ॥ श्रीकृष्णप्रणम
 द्यु ॥ ॥ शाकेष्टुष्टुमार्गिष्ठिवृक्षं ३० ईहुवार

Joint Project of the Reliance Software Foundation, Munshi Premchand Museum, Varanasi, and the Yachchandra Devi and Manohar Lal Chaturvedi Library, Varanasi

(6)

॥ श्री अमृता नुभव ॥ प्रकरण ॥ २ ॥ प्रारंभ ॥



३

(८)

श्रीगणेशायनमः ॥ १ ॥ आत्मापायवनवसंतु ॥ जोआजेचाआहेतु ॥
 अमूर्तचिक्षीमूर्तु ॥ कारण्याचा ॥ २ ॥ मोडनिमायाकुंजर ॥ मुक्तिमोत्तियाचावे
 गर ॥ जेवर्वीतासौमुरु ॥ निवृत्तीवंदु ॥ ३ ॥ जेवियनिथीआडवे ॥ भुंजीतजीव
 पणातेभवे ॥ तयाचेत्त्वाचेधावे ॥ वाचमापत्तेजो ॥ ४ ॥ जयाचेनिअपांगपाते
 ॥ बंधमोक्षपाणीआते ॥ भेदेजाणत्याजाणत ॥ जयापासी ॥ ५ ॥ कैनल्य
 कनकान्तियादाना ॥ जोनकउसीभार ताना ॥ द्रष्ट्यान्तियादरवाना ॥ पा
 ठाउजो ॥ ६ ॥ सामर्थ्याचेनिविके ॥ जोविवस्त्रेहीगुरत्वंजिंके ॥ आत्माआत्मा
 सुखदेखे ॥ आरिसाजीये ॥ ७ ॥ वाधचंद्राचीयाकाळा ॥ विखुरलीयएकवे
 का ॥ हृपापुनिवलीका ॥ करीजयत्वी ॥ ८ ॥ जोभेटलियानिसवे ॥ पुरती

उपायर्वेधावे ॥ प्रवृत्तींगगास्तिरावे ॥ सागरीजीये ॥ ६ ॥ जयानेनिष
नवसरे ॥ द्रष्टालेहर्यान्वेमोहिरे ॥ जोप्तेटतरेवेसरे ॥ बड़रूपविहे ॥ ७ ॥ स
ईअविद्यनेकाकवखे ॥ किंस्वबोधसुदीनफाँके ॥ सीत्तेप्रसादाके ॥ जयाने
नि ॥ ८ ॥ जयानेनिरूपासल्लिले ॥ जीवहाठावेवेहीपाखाके ॥ जेत्रिवपण
हीवोविके ॥ आंगीनलवी ॥ ९ ॥ राववेजातानिष्ट्याते ॥ मुरूपणहीधाडि
लेथिने ॥ तरीगुरुगोरवजयाते ॥ सांडविला ॥ १० ॥ एकपणनहेसुसास
॥ ११ ॥ ह्लणोनिंशिष्यानेकरूणिमिस ॥ जोहस्तेचीआपुलीवास ॥ पाहानुआ
स ॥ १२ ॥ जयानेनिरूपतुषारे ॥ परत्तेअविद्यनेमोहिरे ॥ परिणमेभ
पारे ॥ बोधामृते ॥ १३ ॥ वेद्यातेदतामिशी ॥ वेदकुत्तैहीसूयेपेयी ॥ सरी

(८A)

उरु

#

नोक्तेचितुस्ती ॥ हिठीजयाची ॥ १६ ॥ जयोनेनिसावेय ॥ जीतुत्रम्भउपरूप
 हे ॥ ब्रह्मतृणात्तीजाय ॥ उदासेणे ॥ १७ ॥ उपालीवरीरावतया ॥ उपायफ
 क्षियेतीमौडनिया ॥ विवंडलेजयाचीया ॥ अनुज्ञाका ॥ १८ ॥ जयाचादितिक
 वसंतु ॥ जर्वेनदिवेनिगमवनाआंतु ॥ दवाआपुलियेफलीहातु ॥ नवेष्टेतीहे
 ॥ १९ ॥ पुठादृष्टीचेनिअलगे ॥ खोर्वीविकामागे ॥ एहेडियाहीजेय
 तानेय ॥ आपणपैजो ॥ २० ॥ लघुत्तमिमुहुल ॥ वेस्त्वागुरत्वानियेसेन
 नासूनिनाथिले ॥ सदैवजो ॥ २१ ॥ नाहीतोजकीबुडिजे ॥ तेघमवेदेणत
 रिजे ॥ जेणेतरिलियाहीनुरीजे ॥ कहणियेठायी ॥ २२ ॥ जेथेआकाशाहे
 सावेयव ॥ नवंधेआवकाशाचीहांव ॥ एसकोणीयेकभरीच ॥ आकाशजो



२३

Palavade Sanskrit Manuscript and the Rashtriya Sanskrit Akademi
 Joint Project on Digitization of Sanskrit Manuscripts

(8A)

चंद्रादीसुसीतवे॥ घटिलीजयोनेनिमैठे॥ सूर्यजयानेनिउजेठे॥ कउवसे
 नी॥ २३॥ जीवपणानेनित्रासे॥ यावयाभाषुडीयेदसे॥ शिवहीमुडर्नेपुसे
 जयाजोसियाही॥ २४॥ चांदिणस्वत्रकाशासे॥ लेडैन्तदेतदुनीचे॥ तहीपैण उघडे
 नवने॥ चंद्रानेजय॥ २५॥ जोउघडकीरतदिसे॥ प्रकाशाधीनप्रकाशे॥ आ
 सतेपणनिनेसे॥ कहणियकडे॥ २६॥ आतजोनोइहीशाढी॥ केसेकउध
 नुमानाचीमार्दी॥ हाप्रमाणाहीबोनेही॥ कोवणाहीमारै॥ २७॥ जेथेशाक्काची कार
 लिहीपुसे॥ तेणसीचावकोवेसे॥ दुजपणानेरागीरसे॥ एकपणाहीजो॥ २८॥
 प्रमाणाचीपरीसरे॥ तेप्रमियनिअविकरे॥ नवलमेनुइयेधुरे॥ काहीना
 हीपणाची॥ २९॥ काहीवाहीअलुमाकु॥ देखेजयरवादेवेकु॥ तरीदेखेतही

रवाकु ॥ जया व्यागावी ॥ ३० ॥ तेथे नमने कंबोले ॥ केउत्ती सुयेपाउले ॥ अंगी
 लाउनिनाडिले ॥ नावनियेण ॥ ३१ ॥ नकेभास्या आस्म प्रदृती ॥ बाठविता
 केनिवृत्ती ॥ यानामाची वाय बुथी ॥ सांडी निवा ॥ ३२ ॥ निवर्त्यत वनही ॥ मा
 निवर्त्ती हाकाई ॥ तरीके सावेस ठायी ॥ निवृत्ती नामाचा ॥ ३३ ॥ पिसूयोसी
 अंधः कारु ॥ केजालाहोतागेचरु ॥ तरातमारी हाउगरु ॥ आलोचिकी ॥
 ३४ ॥ तेसलटिकेयेण रुठे ॥ जउयेण उजी नै ॥ नघेडने हीघेडे ॥ यानियामना
 ॥ ३५ ॥ हांगमाया वसेदविसी ॥ तेमायिक लाणा निवाडिसी ॥ अमायिक त
 वनकेसी ॥ कोष्ठाही विषो ॥ ३६ ॥ दिवदिवार्शी दुरु ॥ तुजलागृदा काईकरु
 ॥ एकाही निर्धाराधरु ॥ देनासिका ॥ ३७ ॥ नामिरुपे बडवसे ॥ उभारुनिष्ठा ॥ ३

(9A)

उलीवोसे ॥ सजेचेनिआवेदो ॥ तोषलासिना ॥ ३८ ॥ जीवुयेनल्लाहौवि
 षे ॥ चालुनेषीनीसाजणे ॥ भृत्युवेरस्वामीपणे ॥ तेहीनहे ॥ ३९ ॥ विशेषमिनि
 नवे ॥ आत्मतहीनसाहैवे ॥ किंबुद्गुनानक्कोवे ॥ कोण्ठीवियया ॥ ४० ॥ रात्रीनु
 रेविसूर्या ॥ नातरीलवणपाणिया ॥ लुरेजेवीनेइलिया ॥ निदजैसी ॥ ४१ ॥
 कपुरावेंथठीवे ॥ नुरेविआगीतीवरवे ॥ नुरेनिरुपनाव ॥ तेसेयया ॥ ४२ ॥
 ॥ यथावियाहातापांयापेते ॥ तववद्यतेपुद्यानमेते ॥ नपेतेविभीडे ॥ भीदानि हा
 ये ॥ ४३ ॥ आपणाप्रतिरचि ॥ उदोनकरीविजवी ॥ हावंद्यनहेतेवी ॥ वंदनामी
 ॥ ४४ ॥ कासमोरपणआपुले ॥ नलाहिजेकाहीकेले ॥ तेसवंद्यत्वधातले ॥
 हारउनियेणे ॥ ४५ ॥ आकाशान्वा आरिसा ॥ नुंठिच्चप्रतिविंवानाठसा ॥ हा

संवेदनकेतेसा ॥ नमस्कारानसी ॥ ४६ ॥ परिनक्षत्रीनक्षा ॥ हेवेखासेकांघे
 वे ॥ पश्चिमहीतयाहीघवे ॥ उरोनेंद्री ॥ ४७ ॥ अंगानियकूणाशालु ॥ केडिता
 चितरीबहेरिलु ॥ कुडुफिटेआनुलु ॥ नफुउतानि ॥ ४८ ॥ नानाविवपणास
 रिसे ॥ देवोनिप्रतिबिवन्नेसे ॥ नेलवंशत्वंणेतेसे ॥ वंदितेनसी ॥ ४९ ॥ नाही
 रुपान्वीजेधेसोय ॥ तेधेदृष्टीचकाहीनाह ॥ आसाकछलेहेपाय ॥ ऐसियाद
 शा ॥ ५० ॥ गुणातेलाचियासोय ॥ ५१ ॥ निर्जिहिसोदीपकछिका ॥ तेकायीहा
 यीउपुछिका ॥ कापुरानिया ॥ ५२ ॥ तयादाहापरम्परे ॥ होयनाजवमेल्हरे ॥ त
 वहोहीनेहीसरे ॥ सरिसेचिजैवी ॥ ५३ ॥ तेकीदेवेनामीययाते ॥ तवगेलेवंघ
 वंदिते ॥ चईलियाकांते ॥ संगीन्नेजैवी ॥ ५४ ॥ किंबहुनायेयाभाषा ॥ ईताचा ॥ ५५

(० A)

जेथे उक्का ॥ फैडनिया स्वसरवा ॥ श्रीमुहूर्तीवंदिला ॥ ३४ ॥ यथा न्यासम्बा
लौनीनवाई ॥ आंगीएकपणारूपनाही ॥ आणि गुरुस्त्रियोदुकॉही पवाडुकेला की
॥ ३५ ॥ कैसाआपणियाआपण ॥ देवीणसोईरपण ॥ हाथाहनिविलक्षण ॥
नाहीनानोहे ॥ ३६ ॥ जगभघवेपाटीमाये ॥ गगनायेकैडहोउनिठाये ॥ कीति
चिहोउनिश्चीसहे ॥ नाहीपणुनि ॥ ३७ ॥ नापणतेतरीभाधार ॥ सिंधुजेसादुर्भ
र ॥ तेसाविसर्थापाङ्गेत ॥ जेया न्याघरि ॥ ३८ ॥ तेजातमातेकंही ॥ परम्परनि
केनाही ॥ परीमर्याचेठायी ॥ सर्वेचिहाती ॥ ३९ ॥ तेसाएकह्यंताभेद ॥ तानि
कीनानालेनांदे ॥ विसर्थेभापणियाविसर्थे ॥ हातीलकाई ॥ ४० ॥ ह्यंनोनिमि
व्यआणि गुरुनाथ ॥ यादोहोंगान्वाअर्थ ॥ श्रीगुरुचिपरिनहोतु ॥ दोहोठं
ई ॥ ४१ ॥

कांसुवर्णभाणिलेण ॥ वसने एके सुवर्णे ॥ कर्मचंद्रभाणि चंद्रिणे ॥ चंद्रिनिजेवी ॥
 ६२ ॥ नानाकापुरभाणिपरिमळ ॥ मिकूनिकापुरचिकेवळ ॥ नातरीगोडीभाणि
 गुडु ॥ गुडुनिजेवी ॥ ६३ ॥ तैसागुरसिथमिसे ॥ हानियेकुउल्हासे ॥ जरीका
 हीदिसे ॥ दानीपण ॥ ६४ ॥ आरिसाभाणिमुख्या ॥ मूर्खीदीसेहेउखि ॥ हेआपु
 लियोत्वनिलखवी ॥ जाणिमुख्य ॥ ६५ ॥ याहापानिरंजनीनिदेल्ला ॥ तीनिर्वादए क
 ला ॥ परीनेतान्वेवविताजाला ॥ दान्नीतान्नि ॥ ६६ ॥ जीतोनिनेतान्वेववी ॥ तेवीहानि
 बुझेहानिबुझावी ॥ गुरसिथलनांदवी ॥ एसनिहा ॥ ६७ ॥ दर्पणीवरणडोका ॥ अपु
 लियेभेटीचासोहका ॥ भोगिनातरीलीका ॥ सांगतोहे ॥ ६८ ॥ एवंदेतासीउम
 सो ॥ नेहीएक्षासीविसकुसो ॥ सोईरिकेचाभतिसो ॥ पोखीतसे ॥ ६९ ॥ निव
 न

(11A)

नीजयोन्वेनाव ॥ निवृत्तीजयाचीबरव ॥ जयानिवृत्तीरागिव ॥ निवृत्तीम्बी ॥ ७० ॥
 वांचोनिप्रवृत्तीविराधे ॥ कांनिवृत्तीचेनिवोधे ॥ आणिडेतेसावदे ॥ निवृत्तीनेक्षे
 ॥ ७१ ॥ आपणापैदुनिराती ॥ दिवसाआणिउम्भती ॥ प्रवृत्तीवारीनिवृत्ती ॥ न
 विहेतेसा ॥ ७२ ॥ विपसद्याचेवळ ॥ घिरुनिमिरुवेकीळ ॥ तेसेरत्ननकेविनिखब
 ॥ चक्रवतीहा ॥ ७३ ॥ गगनाहिसूनिपायी ॥ जेसद्रम्बीयघेपुश्ची ॥ तेचोंदिणेहुठी तेजेसी
 अंगजयाचे ॥ ७४ ॥ तेसानिवृत्तीपणासीकारण ॥ हाचिआपणियाआपण ॥ आ
 ध्राणीवयाकुलेचिजालेँ ॥ आपुरीहती ॥ ७५ ॥ दिठीमुखवियाबरवे ॥ पाडीकडनिजेकं
 ता वे ॥ तेआरिसेधांडोक्कवे ॥ लागतीकाई ॥ ७६ ॥ कीरतीहालगेलिया ॥ दिवेसुहान
 आलिया ॥ कायस्थर्यपणस्थर्य ॥ होकवेलागेत ॥ ७७ ॥ सुगोनिवोध्यवोधोहुनी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com